

जैली इल्के के 12 मदनी कामों में से पहला मदनी काम



SADA E MADEENA (HINDI)

# सदाएँ मदीना

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الحمد لله الذي جعل مكة منى العباد

फ़ज़ का वक़्त हो गया उड़ो!  
हे गुलामाने मुस्तफ़ा उड़ो!

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा  
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ**

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

**اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ**

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المُسْتَطَرَف ج ۱ ص ۳۰ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



## क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(तاريخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفكر بيروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये ।



## तआक़फ़ मजलिसे तशजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ

ने येह रिसाला “सदाएँ मदीना” उर्दू ज़बान में पेश किया है और मजलिसे तराजिम ने इस रिसाले का ‘हिन्दी’ रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या’नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तशजिम को (ब ज़रीअए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़हा व सतर नम्बर) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

ख़ास नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबिता करने की इजाज़त नहीं है।

### उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त क लीपियांतर ख़ाक़

थ = تھ	त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چ	च = ج	झ = جھ	ज = ج	स = س	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह = ح
श = ش	स = س	ज़ = ز	ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड़ = ڈ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	ص = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئی	و = و	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	ن = ن

✍ :- राबिता :- ✍

मजलिसे तशजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net





اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط



(जैली हल्के के 12 मद्दती कामों में से पहला मद्दती काम)

दुरुद पाक की फज़ीलत



सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने आलीशान है **أَوَّلَى النَّاسِ بِنِعْمَةِ الْيَوْمِ أَكْثَرُهُمْ عَلَى صَلَٰةٍ :** या'नी क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे करीब वोह शख्स होगा, जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ता होगा।<sup>(1)</sup> मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان** इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा, जो हुज़ूर (**صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) के साथ रहे और हुज़ूर (**صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) की हमराही नसीब होने का ज़रीआ दुरुद शरीफ़ की कसरत है। इस से मा'लूम हुवा कि दुरुद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत के दुल्हा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** (मिलते हैं)।<sup>(2)</sup>

हज़र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूँ रज़ा लौट जाऊँ पा के वोह दामाने आली हाथ में<sup>(3)</sup>

**صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد**



[1].....ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلوة... الخ، ص ۱۳۲، حدیث: ۳۸۳

[2].....میر آتول مناجیہ، دुरुद شریف کا باب، दूसरी फ़स्ल, 2/100

[3].....हदाइके बख़्शिश, स. 104





## शे'र की वज़ाहत

इस शे'र में आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ अपने आप को मुख़ातब कर के इरशाद फ़रमा रहे हैं : ऐ रज़ा ! मैदाने ह़शर में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपने उ़श्शाक़ और दीवानों पर फ़ज़लो करम फ़रमा रहे होंगे तो उस आ़लम में मेरी बेखुदी का आ़लम कैसा होगा ? बस मैं तो सरकारे वाला तबार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन थाम लूंगा ।

**صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّدٍ**

## सदाएँ मदीना क्या है ?

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में नमाज़े फ़ज़्र के लिये मुसलमानों को जगाना **सदाएँ मदीना** कहलाता है । **सदाएँ मदीना** दा'वते इस्लामी के बारह (12) मदनी कामों में से एक इन्तिहाई अहम मदनी काम है जो कि शरअन मूजिबे सवाब है । जैसा कि फ़तावा रज़विyyा शरीफ़ जिल्द 5, सफ़्हा 378 पर है कि आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ से नमाज़े फ़ज़्र के लिये लोगों को उठाने के मुतअल्लिक पूछा गया कि अगर नमाज़ियों को नमाज़ के वक़्त से घन्टा आध घन्टा पहले उन की इजाज़त से या बिग़ैर इजाज़त उन के मक़ानों पर जा कर फ़ज़्र की नमाज़ के वासिते ब ताकीद जगा दिया जाए तो जाइज़ है या नहीं ? तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ ने उस का जवाब येह





अता फ़रमाया कि नमाज़ के लिये जगाना मूजिबे सवाब है, मगर वक़्त से इतना पहले जगाने की क्या हाज़त है? अलबत्ता! ऐसे वक़्त जगाए कि इस्तिन्जा व वुजू वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर सुन्नतें पढ़ें और तक्बीरे ऊला में शामिल हो जाए।<sup>(1)</sup>

### सदाएँ मदीना लगाना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! सदाएँ मदीना लगाना **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बड़ी ही प्यारी सुन्नत भी है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन तिख़फ़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि एक बार उन्हें चन्द सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** के हमराह महबूबे खुदा, सय्यिदुल अम्बिया **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का मेहमान (Guest) बनने का शरफ़ हासिल हुवा तो खाने वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर वोह सब मस्जिद शरीफ़ में आ कर आराम करने लगे, फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर, सरापा नूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने सोए हुवे लोगों को बुलन्द आवाज़ से नमाज़ पढ़ने के लिये जगाया।<sup>(2)</sup> इसी तरह एक रिवायत में हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह (या'नी हज़रते सय्यिदुना नकीअ बिन हारिस सक़फ़ी) **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मैं सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के साथ नमाज़े फ़त्र के लिये निकला तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** सोए हुवे जिस शख़्स पर भी गुज़रते, उसे नमाज़ के लिये आवाज़ देते या पाउं मुबारक से हिलाते।<sup>(3)</sup>



[1].....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 378

[2]..... مُسْنَدُ أَحْمَد، حَدِيثُ طَعْنَةِ الْغَفَارِي، ٥٨٦/٩، حَدِيثُ: ٢٢٢٥٩ مَفْهُومًا

[3]..... ابوداؤد، كِتَابُ الصَّلَاةِ، بَابُ الاِضْطِجَاعِ بَعْدَهَا، ص ٢٠٨، حَدِيثُ: ١٢٦٣





**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जो खुश नसीब इस्लामी भाई **सदाएँ मदीना**

लगाते हैं, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** अदाएँ सुन्नत का सवाब पाते हैं। याद रहे ! पाउं से हिलाने की सब को इजाज़त नहीं। सिर्फ़ वोह बुजुर्ग पाउं से हिला सकते हैं कि जिस से सोने वाले की दिल आज़ारी न होती हो। हां अगर कोई मानेए शर्ई न हो तो अपने हाथों से पाउं दबा कर जगाने में हरज नहीं। यकीनन हमारे मीठे मीठे आका, मदीने वाले मुस्त्फ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** अगर अपने किसी गुलाम को मुबारक पाउं से हिला दें तो उस के सोए हुवे नसीब जगा दें और किसी खुश बख्त के सर, आंखों या सीने पर अपना मुबारक क़दम रख दें तो खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! कौनैन का चैन बख़्श दें।

एक ठोकर में ज़हुद का ज़लज़ला जाता रहा रखती हैं कितना वक़ार **اَللّٰهُ اَكْبَر** एड़ियां<sup>(1)</sup>

येह दिल येह जिगर है येह आंखें येह सर है जिधर चाहो रखो क़दम जाने आलम<sup>(2)</sup>

**صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّدٍ**

**सुन्नते दावूदी**



**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सुब्ह के वक़्त बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िरी (या'नी नमाज़े फ़ज़्र) के लिये सोए हुवे लोगों को जगाना सिर्फ़ हमारे आका, दो आलम के दाता **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ही सुन्नत नहीं बल्कि एक रिवायत



[1].....हदाइके बख़्शिश, स. 87

[2].....फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने **سَمِ اللّٰهُ** 1/37







में आता है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** भी रात को एक मख़सूस वक़्त पर अपने बीवी बच्चों को जगाते और फ़रमाते : ऐ आले दावूद ! उठो और नमाज़ पढ़ो ! क्यूँकि येह ऐसी घड़ी है जिस में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** सिवाए जादूगर और टेक्स वुसूल करने वालों के सब की दुआ क़बूल फ़रमाता है ।<sup>(1)</sup>

### सहाबए किराम का अम्बियाए किराम की सुन्नत पर अमल



मीठे मीठे इस्लामी भाइयों ! **सदाएँ मदीना** लगाना अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की इस क़दर प्यारी सुन्नत है कि सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** ने भी इसे ख़ूब अपनाया और वोह भी हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की तरह अपने घरवालों को जगाया करते जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोहतरम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** रात में जिस क़दर ख़ तअ़ाला चाहता, नमाज़ पढ़ते रहते, यहां तक कि जब रात का आख़िरी वक़्त होता तो अपने घरवालों को भी नमाज़ के लिये जगा देते और उन से फ़रमाते : **الْقَلُوةُ** या'नी नमाज़ । फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाते :

وَأُمْرَأُكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ

عَلَيْهَا لَا نَسْأَلُكَ بِرِزْقًا نَحْنُ

نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَى ①

(प: १६, पृ: १३२)

तर्जमए कज़्ज़ुल इम़ान : और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक़्म दे और खुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझे से रोज़ी नहीं मांगते हम तुझे रोज़ी देंगे और अन्जाम का भला परहेज़गारी के लिये ।<sup>(2)</sup>



①.....مُسْنَدُ أَحْمَد، مسند المدنين، حديث عثمان بن أبي... الخ، ٦/٢٠٨، حديث: ١٩٤١٤

②.....مَشْكَاةُ الْمَصَابِيح، كتاب الصلاة، باب التحريض... الخ، الفصل الثالث، ١/٢٣٣، حديث: ١٢٣٠







मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येही नहीं बल्कि खुलफ़ाए राशिदीन में से हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने तो अपने आका, दो आलम के दाता **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की येह सुन्नत अदा करते हुवे जामे शहादत नोश फ़रमाया । चुनान्चे,

### अदाउ सुन्नत पर मौत



दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 864 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने फ़ारूके आ'ज़म (जिल्द अव्वल) सफ़हा 757 पर है । बा'ज़ रिवायात में है कि (अमीरुल मोमिनीन हज़रते) सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** अपने घर से जब (भी) नमाज़े फ़ज़्र के लिये निकलते तो **सदाउ मदीना** लगाते हुवे निकलते या'नी रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते, अबू लुअलुअ रास्ते में ही छुपा हुवा था और उस ने मौक़अ देख कर आप पर खन्ज़र के तीन कातिलाना वार कर दिये जो मोहलिक साबित हुवे ।<sup>(1)</sup>

**सदाउ मदीना** दूँ रोज़ाना सदक़ा

अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही<sup>(2)</sup>

**صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**



[1] ..... طبقات كبرى لابن سعد، ٥٦- عمر بن الخطاب، ذكر استخلاف عمر، ٣/ ٢١٣ م.فهو

[2] ..... वसाइले बख़िश (मुम्मम), स. 103





इसी तरह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** की शहादत का वाकिआ बयान करते हुवे इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم** फ़रमाते हैं कि जब मुअज़्ज़िन ने आ कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** को वक़्ते नमाज़ की इत्तिलाअ दी तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** नमाज़ पढ़ाने के लिये घर से चले और रास्ते भर लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ लगा कर जगाते जा रहे थे कि इब्ने मुल्जम ख़बीस ने आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** पर अचानक तल्वार का भरपूर वार किया, जिस से आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** शदीद ज़ख़मी हो गए और बा'द में ज़ख़मों की ताब न लाते हुवे जामे शहादत नोश फ़रमा गए।<sup>(1)</sup>

**اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। **آمِينَ بِحَمْدِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

सब को नमाज़ों के लिये बेदार मैं करूँ

मौला अली का वासिता या रब्बे मुस्तफ़ा

**صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** ने हमें अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया है, जैसा कि पारह 27 सूरतुज्ज़ारियात की आयत नम्बर 56 में इरशाद होता है : **(۵۶) (پ ۲۷، الذّٰر یٰت: ۵۶) : وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ** तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी लिये) बनाए कि मेरी बन्दगी करें।



[1] ..... تاريخ الخلفاء، على بن ابی طالب، فصل فی مبايعة علی بالخلافة... إلخ، ص ۱۱۲ مأخوذاً





अफ़सोस ! सद अफ़सोस ! हम तो अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** की याद से गाफ़िल हो कर महज़ दुनियावी लज़्ज़तों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के हुसूल में मगन हैं, मगर हमारे रब **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत है कि हमारी बख़्शिश के बहाने दूँडती है। जैसा कि किसी ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

رَحْمَتِ عَزَّوَجَلَّ "بِهَاءِ" مَعِ جَوِيدِ رَحْمَتِ عَزَّوَجَلَّ "بِهَاءِ" مَعِ جَوِيدِ

या'नी **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत कीमत तलब नहीं करती बल्कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत तो बहाना दूँडती है।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से मरवी है कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब, कुल उम्मत के तबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : जब रात का एक तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है तो **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** आस्माने दुनिया पर (अपनी शान के मुताबिक़) नुज़ूल फ़रमाता है और वोह इरशाद फ़रमाता है : है कोई हाज़त मन्द कि मैं उसे अता करूँ ? है कोई दुआ करने वाला कि मैं उस की दुआ क़बूल करूँ ? है कोई तौबा करने वाला कि मैं उस की तौबा क़बूल करूँ ? है कोई बख़्शिश चाहने वाला कि मैं उसे मुआफ़ करूँ ? यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो जाता है।<sup>(1)</sup> मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** मिरआतुल मनाजीह में एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : आख़िरी तिहाई रात के तीन हिस्से करो, इस के दरमियानी हिस्से में तहज्जुद पढ़ो गोया रात के छठे हिस्से में उसी वक़्त सहरा खाना, दुआएं मांगना बल्कि इस्तिग़फ़ार करना अफ़ज़ल है, क्यूँकि इस वक़्त रहमते इलाही दुनिया की तरफ़ ज़ियादा मुतवज्जेह होती है और इस वक़्त जागना नफ़्स पर शाक़ है।



[1] ..... الشّنة لابن أبي عاصم، باب ذكر نزول ربنا... الخ، ص ۳۳۹، حدیث: ۵۱۰





कर मग़फ़िरत मेरी, तेरी रहमत के सामने

मेरे गुनाह या खुदा हैं किस शुमार में? <sup>(1)</sup>

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## मर्ग की जूट्टी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह हमारी किस क़दर बद किस्मती (Bad Luck) है कि हम इस बा बरकत वक़्त की सआदतों से महरूम और ख़ाबे ग़फ़लत के मर्जों में गुम हो जाते हैं, हालांकि इस वक़्त **اَللّٰهُ** की एक मख़्लूक भी हमें पुकार पुकार कर रब **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत की तरफ़ मुतवज्जेह कर रही होती है, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **मर्ग़ को बुरा न कहो, बेशक येह नमाज़ के लिये बेदार करता है!!!** <sup>(2)</sup> लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपनी आंखों से ग़फ़लत का पर्दा उतारें खुद भी इबादते इलाही में मसरूफ़ हों और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं, इस के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का प्यारा प्यारा मदनी माहोल नेकियों का ज़ख़ीरा करने का एक बहुत ही आसान ज़रीआ है, चूँकि अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने हमें जो अज़ीम मदनी मक्सद



[1].....वसाइले बख़्शिश (मुम्मम), स. 275

[2].....ابوداؤد، کتاب الادب، باب ما جاء في الديك والبهايم، ص ٤٩٤، حديث: ٥١٠١





अता फरमाया है वोह येह है कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है” **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** । लिहाजा सहरी के वक्त रब **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत का हकदार बनने की एक आसान सूरत येह है कि जैली हल्के के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना के एक मदनी काम या'नी **सदाउ मदीना** को अपनी ज़िन्दगी का मा'मूल बना लीजिये, कि इस की बरकत से तहज्जुद के इलावा बा जमाअत फ़त्र की नमाज़ पढ़ने की भी सआदत मिलेगी । मदनी इन्आम पर अमल होगा, येही नहीं बल्कि दर्जे जैल फ़वाइद भी हासिल होंगे । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ।

## सदाउ मदीना के फ़वाइद

### (1) नमाज़ की हिफ़ाज़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **सदाउ मदीना** नमाजे फ़त्र की हिफ़ाज़त का एक बेहतरीन ज़रीआ भी है, इस से जहां **सदाउ मदीना** लगाने वालों की नमाजे फ़त्र की हिफ़ाज़त होती है वहीं **सदाउ मदीना** सुन कर बेदार होने वाले भी नमाजे फ़त्र अदा करने की सआदत हासिल कर लेते हैं ।

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब

सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्तफ़ा <sup>(1)</sup>

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

[1]....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131





## (2) रिज़क़ में इज़ाफ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 103 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब राहे इल्म सफ़हा 91 पर है कि عَلَى الصُّبْحِ बेदार होना, ने'मतों में इज़ाफ़े का बाइस बनता है, खुसूसन इस से रिज़क़ में इज़ाफ़ा होता है। चुनान्वे, रिज़क़ में इज़ाफ़ा चाहते हैं तो सदाएँ मदीना जैसे प्यारे मदनी काम को अपना मा'मूल बना लीजिये, इस से रिज़क़ में इज़ाफ़ा ही नहीं होगा बल्कि दोनों जहाँ की भलाइयां भी नसीब होंगी। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

## (3) एक नमाज़ में कई नमाज़ों का सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाएँ मदीना लगाने वालों की भी क्या बात है कि येह खुद एक नमाज़ पढ़ते हैं मगर सवाब कई नमाज़ों का पाते होंगे। वोह इस तरह की येह सदाएँ मदीना लगाने के बा'द बा जमाअत नमाज़े फ़त्र अदा करते हैं मगर इन की सदाएँ मदीना लगाने की बरकत से जितने इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें नमाज़े फ़त्र अदा करने की सआदत हासिल करते होंगे, اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की रहमत से उम्मीद है, उन की नमाज़ों का सवाब इन्हें (या'नी सदाएँ मदीना लगाने वालों को) भी मिलता होगा। क्यूँकि फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है : مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ فَاعِلِهِ : या'नी जो शख्स नेकी का काम करने पर किसी की राहनुमाई करता है उसे भी वोही अज़्रो सवाब मिलता है, जो उस नेकी करने वाले को मिलता है।<sup>(1)</sup>



..... ابو داؤد، کتاب الادب، باب فی الدال علی الخیر کفأعله، ص ۸۰۱، حدیث: ۵۱۲۹





इस तरह फैले नेकी की दा'वत कि नेक हो

हर एक छोटा और बड़ा या रब्बे मुस्तफा<sup>(1)</sup>

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

#### (4) तहज्जुद की सआदत



**सदाउ मदीना** की बरकत से तहज्जुद की पाबन्दी नसीब हो सकती है कि जिस के मुतअल्लिक अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़ैम अल्लह त़ैअल वज़हे अलक़रि़म से रिवायत है कि महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर क़ैम अल्लह त़ैअल एलैहि व़ैअलैम व़सल्लैम का फ़रमाने अलीशान है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं, जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से देखा जाता है। एक आ'राबी ने उठ कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह क़ैम अल्लह त़ैअल एलैहि व़ैअलैम व़सल्लैम ! येह किस के लिये हैं ? तो आप क़ैम अल्लह त़ैअल एलैहि व़ैअलैम व़सल्लैम ने इरशाद फ़रमाया : येह उस के लिये हैं जो नर्म गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए, मुतवातिर रोज़े रखे और रात को जब लोग सोए हुवे हों तो उठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये नमाज़ पढ़े।<sup>(2)</sup>

में पढ़ता रहूँ काश ! सारे नवाफ़िल

तहज्जुद हो हर शब अदा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

[1].....वसाइले बख़िश (मुम्मम), स. 131

[2]..... त्रिम्झी, क़ाब सफ़ा अल ज़न, बाब माजाअ फ़ी सफ़ा अल ज़न, स. ५९१, हदीथ: २५२८







### (5) पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ की फ़ज़ीलत



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाएँ मदीना की बरकत से पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ पढ़ने की सआदत भी मिलती है और पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ने वाले मदनी इन्आम पर अमल भी हो जाता है । चुनान्चे, पहली सफ़ में नमाज़े बा जमाअत अदा करने के मुतअल्लिक हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर रहमत भेजते हैं ।<sup>(1)</sup> और इसी तरह हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अगर लोग जान लें कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है ? और फिर इन दोनों सआदतों को पाने के लिये अगर उन्हें कुरआ अन्दाज़ी भी करना पड़े तो ज़रूर कर गुज़रें ।<sup>(2)</sup> या'नी लोग जब अज़ान और सफ़े अव्वल के सवाब को जान लेंगे तो हर एक येही चाहेगा कि उसे अज़ान का मौक़अ (Chance) दिया जाए तो ऐसी सूरत में निज़ाअ (झगड़ा) ख़त्म करने के लिये कुरआ अन्दाज़ी का तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ेगा, मगर अफ़्सोस ! लोग इन दोनों आ'माल के सवाब और इन की फ़ज़ीलत से ला इल्म हैं । नीज़ तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत के बारे में मरवी है कि



[1]..... تَسَائِلُ، كِتَابُ الْاِذَاانِ، (۱۴) - رَفَعُ الصَّوْتِ بِالْاِذَاانِ، ص ۱۱۲، حَدِيثُ: ۶۴۳

[2]..... بَخَارِي، كِتَابُ الْاِذَاانِ، بَابُ الْاِسْتِهْمَامِ فِي الْاِذَاانِ، ص ۲۱۸، حَدِيثُ: ۶۱۵ مَقْهُوْمًا





जो शख्स **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा हासिल करने के लिये 40 दिन बा जमाअत नमाज़ पढ़े और तकबीरे ऊला पाए, उस के लिये दो आज़ादियां लिख दी जाएंगी : एक नार (या'नी जहन्नम) से और दूसरी निफ़ाक़ से ।<sup>(1)</sup>

मैं साथ जमाअत के पढ़ूं सारी नमाज़ें

**अल्लाह !** इबादत में मेरे दिल को लगा दे<sup>(2)</sup>

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### (6) नेकी की दा'वत का सवाब



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ के लिये किसी को जगाना यकीनन नेकी की दा'वत देना है और यूं **सदाएँ मदीना** लगाने वाले रोज़ाना नेकी की दा'वत देने का अज़ीम अज़्रो सवाब लूटते हैं । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار** फ़रमाते हैं : जन्नतुल फ़िरदौस खास उस शख्स के लिये है जो नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्ज़ करे ।<sup>(3)</sup>

### (7) दा'वते इस्लामी का तअरफ़



**सदाएँ मदीना** लगाना दा'वते इस्लामी के तअरफ़ का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ है । **सदाएँ मदीना** लगाने से पूरे ज़ैली हल्के में दा'वते इस्लामी की तशहीर होती है और यूं दा'वते इस्लामी का पैग़ाम (Message) घर घर पहुंच जाता है, जिस से लोगों के दिलों में दा'वते इस्लामी की महबूबत पैदा होती है और उन्हें तरगीब दिला कर मदनी माहोल के क़रीब लाना आसान होता है । बिलखुसूस ऐसे



[1].....ترمذی، ابواب الصلاة، باب ما جاء في فضل التكبير الاولى، ص ٨٠، حدیث: ٢٣١

[2].....वसाइले बख़्शिश (मुम्मम), स. 114

[3].....تَنْبِيْهُ الْمُتَوَسِّلِينَ، الباب الرابع، ومنها امرهم بالمعروف ونهى عن المنكر، ص ٢٠١





अलाके जहां दा'वते इस्लामी का मदनी काम नया शुरूअ हो वहां सदाउ मदीना लगाना मदनी काम में बहुत मुआविन साबित होता है।

### (8) सदाउ मदीना में मुसलमानों के लिये दुआ



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई सदाउ मदीना लगाते वक्त घरों में सोए हवों को येह दुआ देता है कि **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ आप को बार बार हज नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए। तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** सदाउ मदीना में दी जाने वाली मदीने की येह दुआएं उस के हक में भी कबूल होंगी।

जैसा कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने आलीशान है : जब आदमी अपने भाई के लिये उस की ग़ैर मौजूदगी में दुआ करता है तो एक फ़िरिश्ता कहता है कि तेरे लिये भी इस की मिस्ल हो।<sup>(1)</sup> जब कि एक रिवायत में है : **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ऐ मेरे बन्दे ! मैं तुझ से शुरूअ करूंगा (या'नी पहले तुझे अता करूंगा)।<sup>(2)</sup>

सदाउ मदीना दिखाए मदीना

इलाही दिखा दे ज़ियाए मदीना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّدٍ



### सदाउ मदीना के दुन्यवी फ़वाइद



सदाउ मदीना एक ऐसा प्यारा मदनी काम है जिस से दीनी फ़वाइद के साथ साथ कसीर दुन्यवी फ़वाइद भी हासिल होते हैं क्योंकि सदाउ मदीना हमेशा



[1].....مسلم، کتاب الذکر... الخ، باب فضل الدعاء... الخ، ص ۱۰۴۹، حدیث: ۲۷۳۲

[2].....قوْثُ الْقُلُوْب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوة فی الله... الخ، ۳۸۲/۲





चेहल कदमी के अन्दाज़ में लगाई जाती है और पैदल चलने के बेशुमार तिब्बी फ़वाइद मन्कूल हैं। जैसा कि एक हिकायत में है कि पड़ोसी मुल्कों के दो बादशाहों में गहरी दोस्ती थी, इन में एक बादशाह तरह तरह के अमराज़ और टेन्शन (Tension) से तंग जब कि दूसरा बादशाह खुशहाल और सिद्दहत मन्द था। एक बार बीमार बादशाह ने तन्दुरुस्त बादशाह से कहा : मैं माहिर तबीबों (Doctors) से इलाज करवाने के बा वुजूद हुसूले सिद्दहत में नाकाम हूँ, आप किस तबीब से इलाज करवाते हैं? तन्दुरुस्त बादशाह ने मुस्कुरा कर कहा : मेरे पास दो तबीब हैं। बीमार बादशाह ने कहा : बराहे करम ! मुझे भी उन से मिलवा दीजिये, अगर उन्होंने ने मेरा इलाज कर दिया तो उन को माला माल कर दूंगा। तन्दुरुस्त बादशाह हंस पड़ा और कहने लगा : मेरे तबीब मेरा बिल्कुल मुफ़्त इलाज करते हैं और वोह दो तबीब हैं : मेरे दोनों पाउं ! और तरीके इलाज येह है कि इन के साथ मैं ख़ूब पैदल चलता हूँ लिहाज़ा मेरी सिद्दहत अच्छी रहती है और आप ग़ालिबन ज़ियादा तर बैठे रहते, पैदल चलने से कतराते और थोड़े थोड़े फ़ासिले पर भी सुवारी पर आते जाते हैं लिहाज़ा खुद को बीमार और ज़ेहनी दबाव का शिकार पाते हैं।<sup>(1)</sup>

पैदल चलने के चन्द एक फ़वाइद मज़ीद मुलाहज़ा फ़रमाइये :



सुबह के वक़्त पैदल चलना, इन्सान को सिद्दहत मन्द रखता है।



पैदल चलना मुख़्तलिफ़ किस्म की बीमारियों (हार्ट अटेक, फ़ालिज, लक्वा, दिमागी अमराज़, हाथ पाउं और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां,



[1].....खुदकुशी का इलाज, स. 71





मुंह के छाले, सीने और फेफड़े के अमराज, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लडप्रेसर, जिगर और पित्ते के अमराज वगैरा) से बचाता है।

❁ पैदल चलने की वजह से जेहनी दबाव (Depression) पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

❁ पैदल चलने से बिलखुसूस सांस फूलने की बीमारी से आफ़ियत रहती है।

❁ सुब्ह के वक़्त पैदल चलने से सारा दिन हश्शाश बश्शाश गुज़रता है।

❁ पैदल चलने से वज़्न भी ए'तिदाल में रहता है।

❁ पैदल चलना याददाश्त को तक्वियत पहुंचाता है।

❁ पाबन्दी से पैदल चलने वाले का ब्लडप्रेसर (Blood Pressure) मुतवाज़िन रहता है।

❁ पैदल चलना हड्डियों को मज़बूत बनाता है।

❁ पैदल चलने वाले मोटापे का शिकार नहीं होते।

❁ पैदल चलने से आ'साबी खिचाव ख़त्म होता है।

❁ पैदल चलने से हाज़िमा दुरुस्त होता है।

❁ इन्सानी आ'जा बेहतर तौर पर काम करते हैं।

❁ पैदल चलने के दौरान खून की गर्दिश तेज़ होती है, जिस की बदौलत जिस्म से एक ख़ास किस्म का ज़हरीला माद्दा ख़ारिज होता है, जिस की ख़ासियत अफ़यून से मिलती जुलती है। इस के ख़ारिज न होने से मुख़लिफ़ दर्दों और तकालीफ़ में इज़ाफ़ा होता रहता है।

❁ पैदल चलने से खून में मौजूद गन्दा कोलेस्ट्रॉल (Cholesterol) ख़ारिज हो जाता है।





## मदीने का बुलावा



ठेंग मोड़ (कुसूर, पंजाब पाकिस्तान) के अलाके इलाहाबाद के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहौल से वाबस्ता तो था लेकिन मदनी कामों के सिलसिले में सुस्ती का शिकार था। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से मुह्रमुल ह़राम 1431 हिजरी ब मुताबिक़ जनवरी 2010 ईसवी को दा'वते इस्लामी के डिवीज़न मुशावरत के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से मुलाकात का शरफ़ हासिल हुवा, जब उन्हें मेरी मदनी कामों में अ़दमे दिलचस्पी का इल्म हुवा तो इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे न सिर्फ़ मदनी काम करने का ज़ेहन दिया बल्कि **सदाएँ मदीना** की पाबन्दी करने की तरगीब भी दिलाई। नीज़ इस ज़िम्न में उन्होंने ने मुझे शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** का फ़रमान "**सदाएँ मदीना दिखाएँ मदीना!**" भी सुनाया। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मेरा ज़ेहन बन गया और हाज़िरिये मदीना की उम्मीद पर अगले ही दिन मैं ने उस पर अमल शुरू कर दिया। **सदाएँ मदीना** क्या लगानी शुरू की, मुझ पर तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** और उस के रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का करम हो गया। मेरे तो वारे ही न्यारे हो गए, किस्मत का सितारा यूँ चमका कि उसी साल मुझे बारगाहे मुस्तफ़ा की हाज़िरी का शरफ़ हासिल हो गया। करम बालाए करम येह कि **सदाएँ मदीना** की बरकत से मेरे बड़े भाई को भी हज़ की सआदत नसीब हो गई, दौराने हज़ शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** से बैअत होने का शरफ़ भी मिल गया। शायद येह मदीने शरीफ़ की हाज़िरी और एक वलिये कामिल से बैअत की बरकत थी कि मेरे भाई





जो पहले नमाज़ों की अदाएगी में सुस्ती का शिकार थे, नेकियों की जानिब माइल होने लगे और बा जमाअत नमाज़ का एहतिमाम करने लगे। दाढ़ी शरीफ़ की भी निर्यत कर ली। हज़ से वापसी के कमो बेश दो माह बा'द जब कि एक अज़ीज़ की शादी में शरीक थे, बारात आने ही वाली थी कि नमाज़ का वक़्त हो गया, सब को बा आवाज़े बुलन्द नमाज़ की दा'वत दी और मस्जिद की जानिब चल दिये। जब वुजू के लिये वुजू खाने पर पहुंचे तो अचानक दिल का दौरा पड़ने की वजह से गिर पड़े। नमाज़ियों ने आगे बढ़ कर उठाया और मस्जिद में लिटा दिया। मस्जिद में लिटाते ही उन की रूढ़ कफ़से उनसुरी से परवाज़ कर गई। वहां मौजूद सभी लोग भाईजान की इस ईमान अफ़रोज़ वफ़ात पर अफ़सोस के साथ साथ रश्क करने लगे।<sup>(1)</sup>

सदाएँ मदीना दिखाए मदीना

इलाही दिखा दे ज़ियाए मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सदाएँ मदीना और अमीरे अहले सुन्नत



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ भी सदाएँ मदीना लगाया करते थे जैसा कि एक मदनी मुज़ाकरे में आप इरशाद फ़रमाते हैं : मैं अपने घर, पीर कोलोनी से फ़ज़्र में फ़ैज़ाने मदीना आते हुवे सदाएँ मदीना लगाता था।<sup>(2)</sup>



[1].....चमकदार कफ़न, स. 9












[2].....मदनी मुज़ाकरा, 10 जुमादिल ऊला, 1436 यकुम मार्च 2015







## सदाउ मदीना के चन्द मदनी फूल

- (1)  **सदाउ मदीना** शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के मुनाजातों, ना'तों और मन्क़बतों के मुअ़त्तर मुअ़त्तर मदनी गुलदस्ते वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) के सफ़हा 665 के मुताबिक़ ही लगाएं क्यूंकि **عَزَّوَجَلَّ** के वली की ज़बान, निगाह और दुआ के साथ साथ तहरीर में भी असर होता है।
- (2)  **सदाउ मदीना** के लिये मेगाफ़ोन (Mega Phone) का इस्ति'माल न करें।
- (3)  इस्लामी भाइयों की ता'दाद ज़ियादा होने की सूरत में मुख़्तलिफ़ सम्तों में दो-दो इस्लामी भाई भेज दिये जाएं।
- (4)  अगर कोई इस्लामी भाई न आए तो अकेले ही **सदाउ मदीना** की सआदत हासिल करें।
- (5)  **सदाउ मदीना** अजाने फ़ज़्र के बा'द शुरू की जाए।
- (6)  जहां कहीं जानवर (Animals) वग़ैरा बंधे हों, वहां आवाज़ क़दरे कम होनी चाहिये।
- (7)  **सदाउ मदीना** से फ़ारिग़ हो कर मस्जिद में इतनी देर पहले पहुंचें कि सुन्नते क़ब्लिय्या इक़ामत से क़ब्ल और सफ़े अक्वल व तकबीरे ऊला पा सकें।
- (8)  **सदाउ मदीना** से क़ब्ल ही इस्तिन्जा और वुजू से फ़ारिग़ हो लें।
- (9)  फ़ज़्र में उठाने के लिये तरगीब और नाम लिखने की तरकीब भी की जाए।
- (10)  जो इस्लामी भाई नाम लिखवाएं, उन के दरवाज़े पर दस्तक दें या बेल (Bell) भी बजाएं। मोबाइल कोल / Sms के ज़रीए भी नमाज़ के लिये जगाया जा सकता है।
- (11)  किसी भी मो'तरिज़ (ए'तिराज़ करने वाले) या झगड़ालू से झगड़ें न उलझें।





(12) अजाने फ़ज़्र से इतनी देर पहले उठें कि आप ब आसानी फ़ज़्र का वक़्त शुरू होने से क़ब्ल इस्तिन्जा व वुज़ू और तहज्जुद से फ़ारिग़ हो सकें।

(13) वक़्ते मुनासिब पर उठने के लिये अलार्म (Alarm), घर के किसी बड़े, चौकीदार या किसी इस्लामी भाई को जगाने का कहने की तरकीबें करें। शजरए कादिरिया रज़विया ज़ियाइया अत्तारिया में सफ़हा नम्बर 32 पर है : सूरतुल कहफ़ की आख़िरी चार आयतें या 'नी **إِنَّ الزَّيْنَ أَمُّوْا** से ख़त्मे सूरह तक। रात में या सुबह जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़ें आंख खुलेगी।<sup>(1)</sup> **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

(14) जामिअतुल मदीना के त़लबए किराम भी क़रीबी अ़लाके में मदनी मर्कज़ की तरफ़ से दिये गए तरीके कार के मुताबिक़ **सदाउ मदीना** लगाएं, रिहाइशी दरजों में भी **सदाउ मदीना** की तरकीब की जाए। अगर इस के लिये बा काइदा ज़िम्मेदार का त़क़रूर हो तो इस मदनी काम में मज़बूती रहेगी। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

(15) रिहाइशी मद्रसतुल मदीना के बड़े त़लबा भी क़रीबी अ़लाके में मदनी मर्कज़ की तरफ़ से दिये गए तरीके कार के मुताबिक़ **सदाउ मदीना** लगाएं, नीज़ दरजों (Classes) में भी इस की तरकीब की जाए। (दरजे में जो **सदाउ मदीना** लगाई जाए, उस के अल्फ़ाज़ में कुछ तरमीम के साथ मसलन इस्लामी भाइयो ! की जगह “मदनी मुन्नो !” कहा जाए)

(16) ता'लीमी इदारों (यूनीवर्सिटी व कोलेजिज़ वगैरा) के होस्टेलज़ में त़लबा (Students) भी तन्ज़ीमी तरीके कार के मुताबिक़ (ज़ैली हल्कों में लगाई जाने वाली **सदाउ मदीना** के अन्दाज़ पर) **सदाउ मदीना** लगाएं, होस्टेल के अन्दर भी दस्तक दे कर / मोबाइल कॉल / Sms के ज़रीए भी **सदाउ मदीना** लगाई जाए।



[1].....दारी, کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورة الکہف، ص ۳۳، ۱، حدیث: ۳۳۰۷ مفہومًا





## गली में सदाएँ मदीना का तरीका

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ कर दुरूदो सलाम के जैल में दिये हुवे सींगे पढ़ कर इस के बा'द वाला मजमून दोहराते रहिये :

وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِبِكَ يَا حَبِيبُ اللَّهِ  
وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِبِكَ يَا نُورَ اللَّهِ

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ  
الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَنِي اللَّهِ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो ! फ़ज़्र की नमाज़ का वक़्त हो गया है । सोने से नमाज़ बेहतर है । जल्दी जल्दी उठिये और नमाज़ की तय्यारी कीजिये । **اَللّٰهُمَّ** आप को बार बार हज़ नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए ।

(मौक़अ की मुनासबत से नीचे दी हुई नज़्म में से मुन्तख़ब अश'आर भी तर्ज़ में या बिगैर तर्ज़ के पढ़िये)

अब फिर ऊपर दिया हुवा दुरूदो सलाम पढ़िये, इस के बा'द मौक़अ की मुनासबत से दोबारा ऊपर दिया हुवा मजमून या जैल में दिये गए अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के नज़्मकर्दा अश'आर में से मुन्तख़ब अश'आर पढ़िये :<sup>(1)</sup>



[1] .....नेक बनने बनाने के तरीके, स. 188 बित्तसर्रफ़





## फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठो !



फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठो !  
 जागो जागो ऐ भाइयो- बहनो !  
 तुम को हज़ की खुदा सआदत दे  
 उठो ज़िक्रे खुदा करो उठ कर  
 फ़ज़्र की हो चुकी अज़ानें वक़्त  
 भाइयो ! उठ कर अब वुजू कर लो  
 नींद से तो नमाज़ बेहतर है !  
 उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ !  
 जागो जागो नमाज़ ग़फ़लत से  
 अब “जो सोए नमाज़ खोए” वक़्त  
 याद रखखो ! नमाज़ गर छोड़ी  
 बे नमाज़ी फंसेगा महशर में  
 मैं “सदाएँ मदीना” देता हूँ  
 मैं भिकारी नहीं हूँ दर दर का  
 मुझ को देना न पाई पैसा तुम !  
 तुम को देता है येह दुआ अज़ार

ऐ गुलामाने मुस्तफ़ा उठो !  
 छोड़ दो अब तो बिस्तरा उठो !  
 जल्वा देखो मदीने का उठो !  
 दिल से लो नामे मुस्तफ़ा उठो !  
 हो गया है नमाज़ का उठो !  
 और चलो ख़ानए खुदा उठो !  
 अब न मुल्लक भी लेटना उठो !  
 आंख शैतां न दे लगा उठो !  
 कर न बैठो कहीं क़ज़ा उठो !  
 सोने का अब नहीं रहा उठो !  
 क़ब्र में पाओगे सज़ा उठो !  
 होगा नाराज़ किब्रिया उठो !  
 तुम को तयबा का वासिता उठो !  
 मैं हूँ सरकार का गदा उठो !  
 मैं हूँ तालिब सवाब का उठो !  
 फ़ज़ल तुम पर करे खुदा उठो !<sup>(1)</sup>

صَلِّ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



[1] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 666





## माहे रमजानुल मुबारक में “सदाएँ सहरा” पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत के अश्कार



वक्त सहरा का हो गया जागो



वक्त सहरा का हो गया जागो  
उठो सहरा की कर लो तय्यारी  
माहे रमजान के फ़र्ज हैं रोज़े  
उठो उठो वुज़ू भी कर लो और  
चुस्कियां गर्म चाए की भर लो  
होगी मक्बूल फ़ज़ले मौला से  
माहे रमजान की बरकतें लूटो  
खा के सहरा उठो अदा कर लो  
तुम को मौला मदीना दिखलाए  
तुम को रमजान के सदके मौला दे  
तुम को रमजान का मदीने में  
कैसी प्यारी फ़ज़ा है रमजान की  
रहमतों की झाड़ी बरसती है  
तुम को दीदारे मुस्त्फ़ा हो जाए

नूर हर सम्त छा गया जागो  
रोज़ा रखना है आज का जागो  
एक भी तुम न छोड़ना जागो  
तुम तहज्जुद करो अदा जागो  
खा लो हल्की सी कुछ गिज़ा जागो  
खा के सहरा करो दुआ जागो  
लूट लो रहमते ख़ुदा जागो  
सुन्नते शाहे अम्बिया जागो  
और हज भी करो अदा जागो  
उल्फ़त व इश्के मुस्त्फ़ा जागो  
दे शरफ़ रब्बे मुस्त्फ़ा जागो  
देख लो कर के आंख वा जागो  
जल्द उठ कर के लो नहा जागो  
है येह अत्तार की दुआ जागो (1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

[1].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 668





## सदाएँ मदीना की मदनी बहारेँ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाएँ मदीना एक ऐसा प्यारा मदनी काम है कि जिन जिन जैली हल्कों में सदाएँ मदीना की पाबन्दी होती है वहां नमाजे फ़ज़्र में नमाज़ियों की मदनी बहारेँ आ जाती हैं । चुनान्चे,

## शामियाने लगाने पड़े

एक इस्लामी भाई का बयान है : सख़्त सर्दियों के दिनों में हम ने सदाएँ मदीना की पाबन्दी की तो मस्जिद में नमाज़ियों की इस क़दर ता'दाद बढ़ गई कि मस्जिद इन्तिज़ामिय्या को नमाजे फ़ज़्र में मस्जिद के सेहून में जुमुआ की तरह शामियाने लगाने पड़े ।

## सदाएँ मदीना की बरक़त से फैज़ाने मदीना के लिये ज़मीन मिल गई

एक इस्लामी भाई का बयान है : दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के साथ हम एक शहर में गए, अज़ाने फ़ज़्र के बा'द हम सदाएँ मदीना लगाते जा रहे थे कि अचानक एक घर से एक मोर्डन नौजवान हमारे साथ शामिल हुवा और उस ने फ़ज़्र की नमाज़ मस्जिद में बा जमाअत अदा की । बा'द में उस नौजवान के वालिद मदनी क़ाफ़िले वालों से मिलने के लिये आए । येह साहिबे सरवत थे । इन्हों ने आ कर बताया कि सदाएँ मदीना की बरक़त से मेरा ना फ़रमान मोर्डन (Modern) बे नमाज़ी बेटा पंजवक्ता नमाज़ पढ़ने लगा है । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** इस मोर्डन (Modern) नौजवान के वालिद ने मुतअस्सिर हो कर उस शहर में मदनी मर्कज़ फैज़ाने मदीना के लिये ज़मीन दे दी ।

## सदाएँ मदीना दिख्वाएँ मदीना

एक डिवीज़न (Division) के मदनी मश्वरे में दौराने मदनी मश्वरा जब सदाएँ मदीना की बात चली तो एक इस्लामी भाई खड़ा हुवा और कहने लगा :





اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ مَسْجِدٍ मुझे मदीने शरीफ की हाज़िरी की सआदत हासिल हुई है और ये सब सदाउ मदीना की बरकतें हैं कि मैं पाबन्दी से सदाउ मदीना लगाता हूँ।

सदाउ मदीना दिखाए मदीना

इलाही दिखा दे ज़ियाए मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



## सदाउ मदीना के चन्द मुन्तख़ब मदनी फूल



दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों में से (ज़रूरी तरमीम के साथ) मुन्तख़ब चन्द मदनी फूल :

❁❁ “बा'दे फ़त्र मदनी हल्का” मस्जिद और “सदाउ मदीना” आप के अलाके के लोगों के अकाइदो आ'माल का तहफ़फ़ुज़ करेगा। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

❁❁ माहे रजबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअज़्ज़म में ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी का जदवल कुछ यूँ हो कि अव्वलन नमाज़े तहज्जुद बा जमाअत अदा की जाए। फिर सहरी, सदाउ मदीना, नमाज़े फ़त्र बा जमाअत, मदनी हल्का और इशराक़ व चाशत की तरकीब हो।

❁❁ ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी सदाउ मदीना, मदनी हल्का, मस्जिद दर्स, चौक दर्स, अलाकाई दौरा और मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान वग़ैरा पर खुसूसी तवज्जोह दें और इन मदनी कामों में शिर्कत की सआदत हासिल करते रहें।

❁❁ मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान के ज़रीए बहुत से मदनी कामों को शुरूअ या मज़बूत किया जा सकता है। मसलन मदनी काफ़िले व मदनी इन्आमात मस्जिद / घर / स्कूल / कोलेज / चौक दर्स, सदाउ मदीना, अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, VCD इजतिमाअ (ऑडियो, वीडियो), तक्सीमे रसाइल वग़ैरा.....

❁❁ किसी भी मुल्क में दा'वते इस्लामी को मज़बूत करने के लिये सब से पहले चन्द मख़सूस मदनी कामों को मज़बूत किया जाए मसलन मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने







सुन्नत वगैरा), **सदाएँ मदीना**, मद्रसतुल मदीना बालिगान, अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, हफ़तावार इजतिमाअ, मदनी इन्आमात और मदनी काफ़िला ।

❁ मदनी इन्आमात पर अमल करते हुवे बा'दे इशा जल्द सोने की तरकीब करें ताकि तहज्जुद, **सदाएँ मदीना**, बा जमाअत नमाज़े फ़ज़्र, मदनी हल्का, इशराक़ व चाश्त वगैरा की सआदतें ब आसानी हासिल हो सकें ।

❁ अलाकों में जा कर रोज़े रखने रखवाने, **सदाएँ मदीना** लगाने, बा'दे फ़ज़्र मदनी हल्का और इशराक़ व चाश्त की तरकीब बनाई जाए । (बिलखुसूस रजबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअज़्ज़म में और उमूमन हर पीर शरीफ़ को)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**मदनी मुज़ाक़शों से सदाएँ मदीना के मुन्तख़ब मदनी फूल**

❁ दर्स देने, अलाकाई दौरा करने, **सदाएँ मदीना** लगाने, मद्रसतुल मदीना बालिगान में पढ़ने/ पढ़ाने के लिये तन्जीमी ज़िम्मेदारी ज़रूरी नहीं । (6 अगस्त 2016 ईसवी)

❁ मैं अपने घर, पीर कोलोनी से फ़ज़्र में फ़ैज़ाने मदीना आते हुवे **सदाएँ मदीना** लगाता था । (यकुम मार्च 2015 ईसवी)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**औलाद को कम अक्ली से बचाने का नुस्खा**

**अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ख़ैरियत निशान है : जो शख्स दस्तरख़्वान से खाने के गिरे हुवे टुकड़ों को उठा कर खाए वोह फ़राखी की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद कम अक्ली से महफूज़ रहती है ।

(کنز العمال، حرف الميم، کتاب المعيشة و العادات من قسم الاحوال، الباب الاول في الاكل، الفصل الاول في آداب الاكل، المجلد الثامن، ۱۱۱/ ۱۵، حدیث ۳۰۸۱۵)



## माخذ و مراجع

❀❀❀❀	कलाम बारी تعالیٰ	قرآن مجید	❀❀
مطبوعہ	مصنف / مؤلف	کتاب	نمبر شمار
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	کنز الایمان	1
دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۲۹ھ	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	المستند	2
دار المعرفۃ بیروت ۱۳۲۱ھ	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	سنن الدانی	3
دار المعرفۃ بیروت ۱۳۲۸ھ	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	صحیح البخاری	4
دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء	امام ابو الحسن مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	صحیح مسلم	5
دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۲۸ھ	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	سنن ابی داؤد	6
دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	سنن الترمذی	7
دار الصمیعی الرياض ۱۳۱۹ھ	امام ابو بکر احمد بن عمرو ابن ابی عاصم، متوفی ۲۸۷ھ	السنة	8
دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	سنن النسائی	9
دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۳۲۸ھ	علامہ شیخ ولی الدین ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ تیریزی، متوفی ۷۴۱ھ	مشکاۃ المصابیح	10
نعیمی کتب خانہ گجرات	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مرآۃ المناجیح	11
رضا فاؤنڈیشن لاہور	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۳۰ھ	فتاویٰ رضویہ	12
دار الکتب العلمیۃ	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی،	الطبقات	13



بيروت ۱۴۱۱ھ	متوفى ۲۳۰ھ	الكبرى	
دار الكتب العلمية بيروت 2008ء	امام جلال الدين عبد الرحمن سيوطي شافعي، متوفى ۹۱۱ھ	تاريخ الخلفاء	14
دار الكتب العلمية بيروت ۱۴۳۰ھ	فقيه ابو الليث نصر بن محمد سمرقندي، متوفى ۳۷۳ھ	تنبيه الغافلين	15
دار الكتب العلمية بيروت ۱۴۲۶ھ	شيخ ابوطالب محمد بن علي مكي، متوفى ۳۸۶ھ	قوت القلوب	16
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی ۱۴۲۷ھ	امام برهان الدين ابراهيم زرنوجي، متوفى ۶۱۰ھ	براهة علم	17
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی ۱۴۳۳ھ	اعلى حضرت امام احمد رضا خان، متوفى ۱۳۴۰ھ	حقائق بخش	18
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی ۱۴۳۲ھ	حضرت علامه مولانا محمد الياس قادري رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	وسائل بخش	19
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی ۱۴۲۸ھ	حضرت علامه مولانا محمد الياس قادري رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	فيضان سنت	20
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی	حضرت علامه مولانا محمد الياس قادري رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	خود كشي كا علاج	21
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی	حضرت علامه مولانا محمد الياس قادري رَأَمَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ	شجرة قادريه راضويه ضياييه عطاريه	22
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی ۱۴۳۲ھ	المدينة العلمية	نيك پتھاور، پنانے طريقے	23
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی ۱۴۳۶ھ	المدينة العلمية	فيضان فاروق اعظم	24
مكتبة المدينة، باب المدينة كراچی	المدينة العلمية	چمكدار كفن	25





## फ़ेहरिस्त

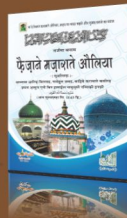
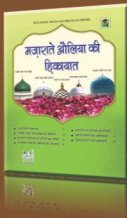
उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	(8) सदाउ मदीना में मुसलमानों	
शे'र की वज़ाहत	2	के लिये दुआ	15
सदाउ मदीना क्या है ?	2	सदाउ मदीना के दुन्यवी फ़वाइद	15
सदाउ मदीना लगाना सुन्नत है	3	मदीने का बुलावा	18
सुन्नते दावूदी	4	सदाउ मदीना और अमीरे अहले सुन्नत	19
सहाबए किराम का अम्बियाए		सदाउ मदीना के चन्द मदनी फूल	20
किराम की सुन्नत पर अमल	5	गली में सदाउ मदीना का तरीका	22
अदाए सुन्नत पर मौत	6	फ़ज़्र का वक़्त हो गया उछे	23
मुर्ग की ड्यूटी	9	माहे रमज़ानुल मुबारक में सदाए	
सदाउ मदीना के फ़वाइद	10	सहरी पर मुश्तमिल अमीरे अहले	
(1) नमाज़ की हिफ़ाज़त	10	सुन्नत के अश्आर	24
(2) रिज़्क में इज़ाफ़ा	11	सदाउ मदीना की मदनी बहारें	25
(3) एक नमाज़ में कई नमाज़ों		शामियाने लगाने पड़े	25
का सवाब	11	सदाउ मदीना की बरकत से फ़ैज़ाने	
(4) तहज़ुद की सआदत	12	मदीना के लिये ज़मीन मिल गई	25
(5) पहली सफ़ में तकबीरे ऊला		सदाउ मदीना के चन्द मुत्तख़ब	
के साथ नमाज़ की फ़ज़ीलत	13	मदनी फूल	26
(6) नेकी की दा'वत का सवाब	14	माख़ज़ो मराजेअ	28
(7) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़	14	फ़ेहरिस्त	30



## नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी काफ़िले में अशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेश मदनी मक्शद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَاءَ اللّٰهُ طویل अपनी इस्लाह के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी काफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ طویل



ISBN 978-969-631-790-6



0126234



MC 1286

## मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुश्क़ल्लिफ़ शाख़ें

- ❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- ❁ अहमदाबाद :- फैज़ाने मदीना, ग्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- ❁ मुम्बई :- फैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खडक, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net